

LOK SABHA

Thursday, December 7, 1967/  
Agrahayana 16, 1889 (Saka).

The Lok Sabha met at  
Eleven of the Clock.

[MR. SPEAKER in the Chair]

in

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

DEFEAT OF INDIAN NOMINEE AT WORLD  
HEALTH ORGANISATION

+

\*511. SHRI GEORGE FERNANDES :  
SHRI JAGESHWAR YADAV :

Will the Minister of HEALTH, FAMILY PLANNING AND URBAN DEVELOPMENT be pleased to state :

(a) whether it is a fact that the Indian nominee for the post of Regional Director of the World Health Organisation for South East Asia was defeated by the Ceylonese nominee at the recently held Regional Conference in Ulan Bator;

(b) whether Government are aware of the allegations made by the Ceylonese Government of the breach of faith by the Indian Government in regard to the election of the Ceylonese to the post; and

(c) if so, the substance of the allegations?

THE MINISTER OF STATE IN THE  
MINISTRY OF HEALTH, FAMILY  
PLANNING AND URBAN DEVELOPMENT (DR. S. CHANDRASEKHAR) :

(a) Yes Sir.

(b) No, Sir. The Government of Ceylon have not made any allegations of breach of faith against us in this matter.

(c) Does not arise.

श्री जार्ज फरनेन्डीज : यह मामला, अध्यक्ष महोदय, जैसे मंत्री महोदय बताना चाहते हैं, उतना मामूली मामला नहीं है। अपने उम्मीद-

वार की जो वहां पर हार हुई है, उस के पीछे बहुत लम्बा इतिहास है, जिस में हमारे स्वास्थ्य मंत्री की बहुत बड़ी गलती है। इन्होंने जैसा कहा है कि इस में कोई ऐसी बात नहीं है, ये वास्तव में सच्चाई को सदन के सामने आने नहीं दे रहे हैं। मेरा मंत्री महोदय से यह प्रश्न है कि जब 1948 में डा० मणि को वर्ल्ड हेल्थ आर्गनाइजेशन का रिजिनल डाइरेक्टर चुना गया था, उस वक्त सीलोन के प्रतिनिधि को हिन्दुस्तान की सरकार की ओर से यह आश्वासन दिया गया था कि पांच साल की अवधि खत्म होने के बाद अगले चुनाव में सीलोन के प्रतिनिधि का समर्थन हिन्दुस्तान के प्रतिनिधि की ओर से किया जायेगा।

DR. S. CHANDRASEKHAR : I would like to tell the hon. Member that it is not true to say that at any time India had assured that India would not put up a candidate, because the point is that the post is filled not by rotation but on merit as per the resolution of the Nineteenth Regional Committee of the World Health Organisation in 1966. On election every country was to nominate a candidate. As such the Indian candidate was put up to stand on merit. But the Committee's approach was rotation which is not always good for the region. The Indian candidate happens to be the Chairman of the Executive Board of the World Health Organisation and President of World Federation of Public Health Organisations besides having other qualities for the post such as distinguished record of service to the Government of India as well as World Health Organisation. On that basis his name was nominated. I do not think there was any assurance written as per requirement of World Health Organisation that India would not put up a candidate since the present incumbent, Shri Mani, happened to be an Indian national.

श्री जार्ज फरनेन्डो : अध्यक्ष महोदय, मेरा जवाब साफ नहीं आया। उन्होंने कहा है कि लिखित आश्वासन नहीं दिया है, क्या उन्होंने कोई ओरल आश्वासन दिया था . . . .

MR. SPEAKER : Is that his second question?

श्री जार्ज फरनेन्डो : नहीं, अध्यक्ष महोदय, वे बड़ी चालाकी से जवाब दे रहे हैं, कह रहे हैं कि लिखित आश्वासन नहीं दिया था, क्या कोई ओरल आश्वासन दिया था—पहले इस का खुलासा आ जाये, तब दूसरा प्रश्न करूंगा।

DR. S. CHANDRASEKHAR : My predecessor might have given an oral assurance in a casual conversation. I am not aware of it.

श्री रवि राय : यह क्या जवाब है ? आप जानते हैं या नहीं ?

श्री जार्ज फरनेन्डो : अध्यक्ष महोदय, मंत्री महोदय ने अपने बयान में झूठ व्यक्त किया है।

DR. S. CHANDRASEKHAR : All I can say is that my predecessor might have given an oral assurance in the course of a casual conversation of which I have no record.

श्री जार्ज फरनेन्डो : आपका मुझे स्पष्ट जवाब आना चाहिये—यह क्या चीज है ?

श्री मधु लिमये : इस से साफ जाहिर है कि ओरल आश्वासन दिया है।

श्री जार्ज फरनेन्डो : मेरा दूसरा प्रश्न है कि क्या जेनेवा में चुनाव होने के पहले जब आप वहां गये, तो क्या सीलोन के प्रतिनिधि ने आपसे यह नहीं कहा था कि डा० सुसीला नैयर ने 1965 में काबुल की बैठक में हमें यह स्पष्ट आश्वासन दिया था कि इस के पहले तीन बार जो हमने आश्वासनों को तोड़ा था, उस को इस बार हम नहीं तोड़ेंगे और 1967 में जो चुनाव होगा, उस में सीलोन के प्रतिनिधि को उम्मीदवार कर के मानेंगे ?

क्या आप की एक्सटर्नल मिनिस्ट्री ने यह सलाह नहीं दी थी कि डा० के० एन० राव को, जो हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति के दामाद हैं, खड़ा नहीं किया जाये और सीलोन को दिये हुए आश्वासन को पूरा किया जाये ? क्या आपने सीलोन के प्रतिनिधि से यह नहीं कहा कि पहले के मंत्री ने चाहे जो आश्वासन दिया हो, लेकिन चुनाव के बाद नया मंत्रीमंडल आया है और मैं नया मंत्री हूँ, इस लिये पहले के मंत्री के आश्वासन से मैं बंधा हुआ नहीं हूँ ?

DR. S. CHANDRASEKHAR : I would like to inform the hon. Member that when I went as the Leader of the Indian Delegation to the World Health Organisation Conference in this summer, not only the Ceylon Ambassador but also the Head of Ceylon, Nepal, Afghanistan, Burmese and Indonesian delegations met me and suggested that they respectively would like to put forward their own candidate. By that time I had been assured by the External Affairs Ministry, emanating from the Geneva office of our government that the name of our Director-General Health Services was already forwarded as a nominee of the Government of India. This happened before I took charge. As such, as a Minister I was bound to support the candidate put forward by the Government of India.

श्री जार्ज फरनेन्डो : अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे संरक्षण चाहता हूँ। क्या उन्होंने यह नहीं कहा था कि पहली सरकार के मंत्री के दिये हुए आश्वासन से . . . .

MR. SPEAKER : He says that before he took over as Minister the other name was put up.

श्री जार्ज फरनेन्डो : वह ठीक है। लेकिन वह जाने के बाद जब उन को सीलोन के एम्बेसेडर ने यह कहा कि देखिये डा० सुसीला नैयर ने 1965 में यह आश्वासन दिया है, 20 साल से हमें फंसा रखा है, इस बार मत फंसाइये—क्या उन्होंने ऐसा आपको कहा था और आपने उन को ऐसा जवाब दिया था

कि सरकार बदली है, इस लिये मैं पहले के आश्वासन से बंधा हुआ नहीं हूँ ।

DR. S. CHANDRASEKHAR : As I have said earlier, a number of Ambassadors and leaders of delegations from the South East Asian region met me and.....

श्री जार्ज फरनेन्डीज : मैं सीलोन के बारे में पूछ रहा हूँ ।

DR. S. CHANDRASEKHAR : ..... pressed their claims, mentioning the merits of their candidates. I was bound to tell them that I am bound by the directive of the Government of India since I am a government representative.

MR. SPEAKER : The question of the hon. Member is whether the Ceylon representative referred to the assurance given by the previous Minister.

DR. S. CHANDRASEKHAR : I am not aware of any such private conversation. I do not record them.

श्री राम सेवक यादव : कैसा साफ झूठ बोला गया है !

विदेशों से सहायता

+

\* 512. श्री प्रकाशवीर शास्त्री :

श्री रामावतार शर्मा :

श्री शिवकुमार शास्त्री :

महंत दिग्विजय नाथ :

डा० सूर्य प्रकाश पुरी :

क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या धीरे-धीरे विदेशी सहायता की राशि को कम करने का प्रस्ताव सरकार के विचाराधीन है; और

(ख) यदि हां, तो इस सम्बन्ध में कब तक अन्तिम निर्णय किये जाने की सम्भावना है ?

उप-प्रधान मंत्री तथा वित्त मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) : (क) और (ख). जैसा कि 'तीसरी पंचवर्षीय आयोजना' में बताया गया था, आर्थिक आयोजना का एक

मुख्य उद्देश्य यह था कि विदेशी सहायता पर निर्भर रहने को धीरे-धीरे कम करके आत्म निर्भरता प्राप्त की जाये । आयोजना का ही एक उद्देश्य होने के कारण इसे ऐसा स्वतन्त्र प्रस्ताव नहीं समझा जा सकता जिसके बारे में अलग से निश्चय करने की आवश्यकता हो ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : मैं यह जानना चाहता हूँ कि अब तक पिछली तीन पंच वर्षीय योजनाओं में अथवा दूसरे विकास कार्यक्रमों में भी भारत ने जो विदेशों से सहायता ली है, अथवा कम्पनियों में समझौते के रूप में जो विदेशों का धन भारत में लगा हुआ है, उस की कुल मात्रा कितनी है और उसके सूद के रूप में भारत को प्रतिवर्ष कितना देना पड़ता है ?

श्री मोरारजी देसाई : तीसरे प्लान में अब तक जो मिला है वह घनराशि 6,006 मिलियन डालर है तथा सब प्लानों में मिलाकर आज तक 9,433 मिलियन डालर मिला है । इस के सूद की सूचना इस समय मेरे पास नहीं है ।

श्री रवि राय : तैयार होकर आना चाहिये था ।

श्री मोरारजी देसाई : सूद के आंकड़े इस वक्त मेरे पास नहीं हैं, बाद में दूंगा ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : पीछे रिजर्व बैंक के गवर्नर ने अपना यह वक्तव्य दिया था जिसमें यह कहा था कि उस देश की आर्थिक स्थिति की इस से ज्यादा दयनीय अवस्था और क्या हो सकती है जिस देश को सूद निबटाने के लिये भी बाहर से ऋण लेना पड़े तो मैं वित्त मंत्री महोदय से जानना चाहता हूँ कि इस प्रकार की अपनी दुर्बल आर्थिक स्थिति को सम्भालने के लिये क्या भविष्य में वित्त मंत्रालय ने कोई योजना बनाई है, अगर बनाई हो तो उस की रूपरेखा क्या है ?

श्री मोरारजी देसाई : शुरु में तो जो ऋण प्रदा करना है वह ऋण प्रदा करने के लिये